उपसंहार

उपसंहार

` शरद जोशी के साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य ` इस लघु शोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस में पहला अध्याय है ` जोशी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ` वैसे तो शरद जोशी के जीवन परिचय के बारे में प्रकाशित रुप में अधिक जानकारी उपलब्ध न हो सकी, ` धर्मयुग ` से जो मदद मिली है उसका निर्देशन यथास्थान किया गया है। शरद जोशी ऊँचे दर्जे के व्यंग्य-रचनाकार रहे हैं। वे मध्य प्रदेश के रहने वाले थे। सन १९५८ से लेकर वे आजन्म लिखते रहे। प्रारम्भ में अखबारों में, रेडिओ पर लिखते रहे। बाद में वे धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका आदि पत्रिकाओं में अपनी रचनाएँ प्रकाशित करते रहे। सन १९८५ से ` नवभारत टाइम्स ` में "प्रतिदिन" स्तम्भ शुरु हुआ, जो आखिरी दिन तक उन्होंने लिखा उन्होंने बहुत एकाग्र मस्तिष्क पाया था। वे पारिवारिक आदमी थे। उनकी पत्नी का नाम है इरफाना। उनका रहन-सहन, खाना-पिता एकदम सादा था। स्वभाव के हँसमुख और खुशमिजाज थे। जोशी जी को संघर्ष पूर्ण जीवन बिताना पडा था। जीवन की कितनी ही घटनाओं को उन्होंने कथानक का रुप दिया है। नौकरी के मोह को छोडकर उन्होंने स्वतंत्र लेखन को ही जीवन-चर्या के रुप में चुना था। इसका अधिकांश व्यंग्य साहित्य राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक घटनाओं से सम्बन्धित है।

द्वितीय अध्याय में व्यंग्य का स्वरुप, परम्परा और व्यंग्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। जब किसी व्यक्ति या समाज की बुराई या न्यूनता को सीधे शब्दों में न कहकर उल्टे या टेढे शब्दों में व्यक्त किया जाता है, तब व्यंग्य की सृष्टि होती है। व्यंग्य एक प्रकार की आलोचना है। व्यंग्य रचना द्वारा व्यक्ति या समाज की कमजोरियों, विकृतियों पर टेढी भंगिमा में दयाशून्य,

सहानुभूतिहीन प्रहार किया जाता है। व्यंग्य एक ऐसा दर्पण है जिसमें देखने वाला स्वयं सहित सबके चेहरों का दर्शन कर सकता है। व्यंग्य का ब्रीद है सुधार सब में सुधार।

व्यंग्य की युगीन परम्परा अपनी अलग शिनाख्त रखती है। व्यंग्य परम्परा वेदों से होकर संस्कृत साहित्य में अपरोक्ष रुप में प्रभाव डालती हुयी हिन्दी साहित्य में पहुँची है। इतिहास का ऐसा कोई कालखण्ड नहीं मिलता कि जिसमें व्यंग्य का सहारा न लिया गया हो। तबसे लेकर अब तक केवल व्यंग्य के स्वरुप में और उद्देश्य में अन्तर आया है। प्राचीन कालसे समाज जैसे जैसे जटिल बनता गया वैसे व्यंग्य भी अपनी मुद्राएँ बदलता गया। तभी तो आज का व्यंग्य पहले वाले व्यंग्य की तरह नहीं है। भारतेन्दु कालीन व्यंग्य आज की तरह विस्फोटक नहीं था। पुरातन अर्थ में व्यंग्य केवल परनिन्दा के अर्थ में प्रयुक्त होता था, आधुनिक अर्थ में वह जीवन की विद्रुपताओं पर तीखा प्रहार करने की समर्थ विधा है। आज के व्यंग्य का प्रभाव केवल विध्वंसात्मक और परिवर्तनगामी ही नहीं, सूक्ष्म और स्पष्ट भी है।

सीधे-साधे ढंग से जो बात कही जाती है वह ज्यादा प्रभावकारी नहीं होती। व्यंग्य के माध्यम से जो बात कही जाती है उसका प्रभाव व्यक्ति और समाज के ऊपर शीघ्र और परिमाण में भी कुछ ज्यादा ही पडता है। जिस धारणा को साहित्य की अन्य विधा अभिव्यक्त कर पाने में असक्षम है उसे व्यंग्य बडी खूबसूरती से कह पाता है। यही कारण है कि व्यंग्य विधा का महत्व दिन-ब-दिन बढ रहा है। व्यंग्य के पीछे परिवेशगत विषमताएँ और विद्रूपताएँ होती हैं, जिनके कारण खण्डित तथा टूटे हुए मानव मूल्यों, की जो वास्तव में नष्ट होने योग्य नहीं हैं, पुनर्स्थापना करने का जोखिम भरा कार्य व्यंग्यकारों ने किया है। कभी कभी व्यंग्य सिर्फ विनोद पैदा करता है, कभी दिल को झकझोरता है, कभी आडम्बर का पर्दाफाश करता है। मतलब यह कि व्यंग्य अनेक रुपों में इस्तेमाल किया जाता है और उसका मानव जीवन में अपना एक

विशिष्ठ स्थान है ।

तीसरे अध्याय में शरद जोशी के साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । हिन्दी व्यंग्य साहित्य में जोशी जी ने अपनी एक स्वतंत्र पहचान कायम की है । शरद जोशी की प्रकाशित रचनाएँ कुल दस हैं । इनमें से केवल पाँच व्यंग्य सकलनों का इस लघु शोध-प्रबंध में अध्ययन किया गया है वे इस प्रकार हैं --` परिक्रमा ` (१९५८),` किसी बहानें ( १९७१ ), ` जीप पर सवार इल्लियाँ ` ( १९७१ ),` यथा सम्भव ` ( १९८५ ),` और ` हम मृष्टन के मृष्ट हमारें ` (१९८७) ।

` परिक्रमा ` उनकी प्रारम्भ की व्यंग्य रचनाओं का संकलन है ,इसमें सत्तर (७०) लघु निबंध संकलित है । लेखक ने परिक्रमा काल में आकार की दृष्टि से छोटे निबंध लिखे हैं लेकिन यह रचनाएँ छोटी होते हुए भी प्रहार की दृष्टि से अत्यन्त सशक्त साबित हुई हैं । इस संकलन में रोजमर्रा जिन्दगी के सभी विषय मिलते हैं । छिलके,आम,पिन,पेन,साबुन आदि की रोचक व्याख्या इन रचनाओं में उपलब्ध है ।` किसी बहानें संकलन में सामाजिक,साहित्यिक तथा मानवी विसंगतिपूर्ण स्वभाव पर तीखा प्रहार करनेवाली रचनाएँ संकलति हैं । जहाँ जहाँ भी उन्हें अन्याय अत्याचार,असंगति दिखाई दी वहाँ वहाँ वे बड़ी सावधानी से त्रुटियों को ढूँढ कर परिवेश के अन्तर्गत दबाएँ दोषों का पर्दाफाश किया है ।

` जीप पर सवार इल्लियाँ ` जैसे संकलनों में शरद जोशी की विपुल व्यंग्य सम्पदा के कुछ नमूने एकत्र हैं । लुप्त होती नैतिकता,असफसरशाही और नेताओं के खोखलेपन तथा विघटित संस्कृति के इस दौर को जोशी जी ने अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है । उनकी पैनी दृष्टि ने राजनीति,समाज और साहित्य की विविध विसंगतियों को गहराई से देखा और समझा था । धर्म, राजनीतिक,सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण कुछ भी उनकी तीक्ष्ण एवं

पैनी दृष्टि से बच नहीं पाया । विसंगतियों का ऐसा मार्मिक उद्‌घाटन उन्होंने किया है जो पाठक का हृदय हिला देता है, स्थिति के प्रति सोचने पर मजबूर कर देता है । आजादी के बाद के भारत का पूरा दस्तावेज इनकी रचनाओं में सुरक्षित है । इन निबंधों में तीखापन गजब का है ।

अनुभवगत सच्चाई ही व्यंग्य का प्राण है । जोशी जी ने अपनी इन रचनाओं में जन-जीवन से प्राप्त अनुभवों को जन-सामान्य की भाषा में व्यक्त करते हुए प्रबुध्द वर्ग को झकझोरा है । इनकी वैज्ञानिक दृष्टि विभिन्न विसंगतियों पर तेज रोशनी डालने में हर समय सतर्क रही है । जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों ने हिन्दी व्यंग्य विधा को बहुमुखी अभिव्यक्ति दी है ।

` परिक्रमा ` की रचनाओं में जोशी जी के मनोरंजक एवं प्रहारक जीवन-दर्शन की जो झाँकी मिलती है,उसी का व्यापक विस्तार एवं पैनापन परवर्ती व्यंग्य संकलनों में सामने आया है । उनकी रचनाएँ खोखले व्यवहारों का दर्पण बनकर सामने आयी हैं । इन की आरम्भिक व्यंग्य रचनाओं में विनोद का गुण अधिक पाया जाता है परन्तु उनके व्यग्य में उत्तरोत्तर प्रहार का गुण बढता गया है ।

चतुर्थ अध्याय में शरद जी के साहित्य में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में तेजी से विसंगतियाँ बढती गई, जिसने व्यंग्य रचना के लिए अधिकाधिक उर्वरा-भूमि प्रदान की । व्यंग्य का जन्म ही समकालीन परिस्थितियों के परिणामस्वरुप ही होता है । आजादी के बाद हमारे नैतिकमूल्य,मान-मर्यादा और आदर्श सब कुछ धराशायी हो गये । इन विसंगतियों ने शरद जोशी के मन-मस्तिष्क को झंकृत कर दिया और उनकी लेखनी व्यंग्य के माध्यम से अपने हृदय के आक्रोश को व्यक्त करने के लिए विवश हो उठी । उनका अधिकांश व्यंग्य साहित्य राजनीतिक,सामाजिक,साहित्यिक , आर्थिक,तथा मानवीय घटनाओं की व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया है । राजनीतिक,

सामाजिक,साहित्यिक,आर्थिक इत्यादि सभी समस्याओं का चित्रण इनकी व्यंग्य रचना में प्राप्त होता है। राजनीति,प्रशासन और समाज उनके व्यंग्य के विशेष लक्ष्य रहे हैं।

जीवन और समस्यागत यथार्थ से जुडी राजनीति के विभिन्न पक्षों पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी है। राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में पनपी हुयी कोई भी विसंगति उनकी पैनी नजर से नहीं बची है। विसंगतियों का ऐसा मार्मिक उद्घाटन उन्होंने किया है कि पढनेवाला चकित होकर सोचने लगता है - अच्छा,इस मामूली-सी दिखनेवाली बात की असलियत यह है। राजनेताओं की गैरजिम्मेदारी,बेईमानी,स्वार्थपरता,भ्रष्ट नैतिकता,व्यक्ति का दोहरा व्यक्तित्व, आपसी सम्बन्धों का विघटन,कथनी और करनी का अन्तर, अर्थ की महत्ता, आदि विषय उनके व्यंग्याक्रमण के लक्ष्य बने हैं। कहीं से कोई विचार उठाकर उसे बीच में छोडा नही, पूर्णता तक पहुचाया है। व्यंग्यकार के धर्म का पूरी तन्मयता और एकाग्रता के साथ उन्होंने पालन किया है।

पंचम अध्याय में शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य की सम-सामयिकता पर विवेचन किया गया है। समाज जीवन की सही तस्वीर जोशी जी के व्यंग्यात्मक साहित्य में देखने को मिलती है। पत्रकारिता और सामयिकता के साथ उनका अभिन्न सम्बन्ध रहा है। पत्रकार होने के नाते समसामयिक विषयों पर उन्होंने सफलतापूर्वक लेखनी चलाई है। उन्होंने हमेशा से अपनी रचनाओं में समकालीन विसंगतियों को महत्व दिया है। किसी घटना के घटते ही जोशी जी उस पर फैारन व्यंग्य रच डालते थे। उन घटनाओं की,समस्याओं की गहराई में पहुँचकर अनुभूति के धरातलपर मूल विसंगति को ग्रहण करके उनको अपनी व्यंग्य चेतना के माध्यम से उजागर किया है। जोशी जी समसामयिक जीवन के प्रति अत्यन्त जागरुक थे। उन्होंने देश की दुर्दशा और अधोगति का निदर्शन अपने चुटीले अन्दाज में किया है। समसामयिक जीवन की विविध अंगों की विषमताओं को सूक्ष्मता के साथ पकडने के क्रम में जोशी जी के काव्य में सामयिकतता एवं

विशिष्ट सन्दर्भ का बोल-बाला हो गया है। समसामयिक विषयों में व्यंग्य कसना यह उनकी महत्वपूर्ण विशेषता है।

शैली और शिल्प के क्षेत्र में जोशी जी ने अनेक नवीन प्रयोग किये हैं। भाषा को सजाते-सँवारते गये हैं। इनका व्यंग्य अनोखी भाषा शैली, लोकोक्तियों, मुहावरे तथा कहावतों और गाली गलौज के शब्दों के प्रयोग से अधिक प्रखर और तीक्ष्ण हो गया है। व्यंग्य रचना में काम चलाऊ भाषा का उपयोग किया है। हिन्दी में सम्प्रेशन की जितनी विविधताएँ उपलब्ध हैं, भाषा का जितना अनूठापन विद्यमान है, शिल्प की जितनी भंगिमाएँ मौजूद हैं उन सब का समन्वित श्रेय शायद सबसे अधिक शरद जोशी जी को दिया जाता है।

शरद जोशी की दस व्यंग्य-रचनाएँ प्रकाशित हैं। जिनमें से प्राप्य पाँच व्यंग्य संकलनों पर यह लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। बाकी की रचनाओं का अनुशीलन आगे आनेवाले शोध-कर्ताओं के लिए एक दिशा प्रदान कर सकता है।

मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को प्रतिष्ठा देने का महत्वपूर्ण कार्य स्वर्गीय शरद जोशी ने किया है। परसाई जी की तुलना में उनके व्यंग्य में आक्रोश, मर्त्सना और ध्वंस की मात्रा कम है। उनका व्यंग्य हल्का अनुभव देते हुए अन्दर-ही-अन्दर चुभता हुआ नासूर की तरह पीडा देता है। हिन्दी साहित्य में आज जो व्यंग्य साहित्य की धारा प्रवाहित हुयी है उसे अधिक तीव्र बनाने का श्रेय जोशी जी को है। राजनीतिक, व्यामोह से लेकर सांस्कृतिक अवमूल्यन, सामाजिक पतन, आर्थिक विघटन सभी कुछ इनकी कृतियों में यथार्थ रुप में मौजूद हैं।

समाज के हर कोने को व्यंग्य का आलम्बन उनकी रचनाओं में बनाया गया है और व्यंग्य के सहारे जो कुछ तोड डालने योग्य है, उसे तोडने की सिफारिश की है। एक स्वस्थ और सुदृढ समाज की स्थापना करना उनके व्यंग्य का उद्देश्य रहा है। अपनी रचनाओं द्वारा जोशी जी मानवतावाद की स्थापना करना चाहते थे। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नाटक, निबंध और कहानी इन विधाओं का आश्रय लिया है किन्तु इन तीनों में प्रमुख रुप से निबंध विधा को साधन के रुप में अपनाया है। इन्होंने व्यंग्य रचना क्षेत्र में इतनी तेजी से अपना नाम स्थापित किया कि आज आप इस क्षेत्र में सामर्थ्यवान व्यक्तित्व के रुप में जाने जाते हैं। एक सफल पत्रकार होने के नाते जोशी जी के समसामयिक विषयों पर अधिक लेखनी चलायी है और विभिन्न विसंगतियों पर गहरी चोट की है। इनके लेखन का अपना रंग ही कुछ और था। उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण रचनाओं में यत्र-तत्र मिल जाता है। उनके व्यंग्य का स्वरुप व्यापक है। राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक, जैसे अनेक विषयों को उन्होंने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है। इनकी रचनाओं में नये यथार्थ को उभारने की क्षमता और नये मूल्यों को पहचानने की शक्ति है। इनकी प्रत्येक रचना सफलता की सीमा पर पहुँची है। जोशी जी का समग्र व्यंग्य-लेखन स्वातंत्र्योत्तर साहित्य की एक महान उपलब्धि है।